bihar board 8th class sanskrit notes | प्रहेलिकाः (पहेलियाँ)

पाठ 4 – प्रहेलिकाः (पहेलियाँ)

प्रहेलिकाः (पहेलियाँ)

(संधि)
[बालकों के बौद्धिक विकास के लिए .....प्रहेलिकाएँ दी गयी हैं।

1. **रेफ आदौ मकरोऽन्ते बाल्मीकिर्यस्य गायकः ।**
सर्वश्रेष्ठं यस्य राज्यं वद कोऽसौ जनप्रियः ।

अर्थ -प्रारम्भ में रकार, मकार अंत में बाल्मीकि जिसका गायन किया है। सर्वश्रेष्ठ जिसका राज्य था वह जनप्रिय कौन था बोलो । (राम)

2. **मेघश्यामोऽस्मि नो कृष्णो, महाकायो न पर्वतः ।**
बलिष्ठोऽस्मि न भीमोऽस्मि, कोऽस्म्यहं नासिकाकरः ॥

अर्थ-मेघ के समान साँवला हूँ मैं। लेकिन कृष्ण नहीं हूँ। विशाल शरीर वाला हूँ लेकिन पर्वत नहीं हूँ। बलवान हूँ मैं लेकिन भीम नहीं हूँ। नाक रूपी
हाथबाला मैं कौन हूँ। (हाथी)

3. **चक्री त्रिशुली न हरो न विष्णुः, महान् बलिष्ठो न च**
भीमसेनः ।
स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि, सीतावियोगी न च
रामचन्द्रः ।

अर्थ-चक्रबाला हूँ लेकिन विष्णु नहीं हूँ। त्रिशूल वाला हूँ लेकिन शिव नहीं हूँ। अत्यन्त बलवान हूँ लेकिन भीमसेन नहीं हूँ । स्वतंत्र रूप से भ्रमण करता हूँ। लेकिन नारद भी नहीं हूँ। सीता से अलग रहने वाला हूँ लेकिन रामचन्द्र नहीं हूँ। (साढ़)

4. **दन्तैहीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः ।**
गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि परपादेन गच्छति ॥

अर्थ—मैं दन्तहीन हूँ। पत्थर खाता हूँ, निर्जीव होकर भी बहुत बोलने वाला हूँ। धागों की सिलाई से युक्त होकर भी दूसरे के पैर से चलता हूँ। (जूता, चप्पल)

5. **स्वच्छाच्छवदनं लोकाः द्रष्टुमिच्छन्ति मे यदा ।**
तत्रात्मानं हि पश्यन्ति खिन्नं, भद्रं यथायथम् ।।

अर्थ-जब साफ अच्छा शरीर वाले लोग मुझे देखना चाहते हैं जो वहाँ अपने को देखते हैं, चाहे उदास हो या अच्छा (प्रसन्न) सही-सही दिखता है। (दर्पण)

https://www.evidyarthi.in/

शब्दार्थ-

रेफ= रकार । आदौ = शुरू में । मकारोऽन्ते (मकारः + अन्ते) = मकार अन्त में हो। गायकः = गवैया, गानेवाला । सर्वश्रेष्ठम् = सबसे अच्छा । वद = बोलो । कोऽसौ (कः+असौ) = कौन वह । जनप्रियः = लोकप्रिय । मेघश्यामः = बादल की तरह साँवला । कृष्णः =श्रीकृष्ण । महाकायः=विशाल शरीर वाला । बलिष्ठोऽस्मि (बलिष्ठ: + अस्मि) = बलवान हूँ। भीमोऽस्मि (भीमः + अस्मि) = भीम (पाण्डवों में से एक) हूँ, भयंकर हूँ। कोऽस्म्यहम् (कः + अस्मि + अहम्) =कौन हूँ मैं । नासिकाकरः = नाक रूपी हाथ वाला । चक्री= चक्रधारी, चक्र वाला । त्रिशूली = त्रिशूलधारी । हरो (हरः) = शिव । स्वच्छन्दगामी= रूप से भ्रमण करने वाला । सीतावियोगी= हल से अलग, सीता से अलग । नारदः = ब्रह्मा जी के पुत्र (जो हमेशा घूमते रहते हैं) । दन्तैर्हीनः (दन्तैः + हीनः) =दाँतों से रहित । शिलाभक्षी = चट्टानों को खाने वाला। निर्जीव=प्राण रहित । बहुभाषकः =बहुत बोलने वाला । गुणस्यूतिसमृद्धः = धागों (गुण) की सिलाई से युक्त । परपादेन = दूसरों के पैर से स्वच्छाच्छवदनम् (स्वच्छ + अच्छवदनम्) = साफ व अच्छा मुख । द्रष्टुमिच्छन्ति (द्रष्टुम् + इच्छन्ति) देखना चाहते हैं। आत्मानम् = अपने को । खिन्नम् = दुःखी/उदास । भद्रम् अच्छा । यथायथम् = जैसा हो वैसा ।

सन्धिविच्छेद

मकाकरोऽन्ते = मकारः + अन्ते (विसर्ग-सन्धि)। वाल्मीकिर्यस्य= वाल्मीकिः + यस्य (विसर्ग-सन्धि)। कोऽसौ = कः + असौ (विसर्ग-सन्धि) । मेघश्यामोऽस्मि =मेघश्यामः + अस्मि (विसर्ग-सन्धि) । बलिष्ठोऽस्मि = बलिष्ठः + अस्मि (विसर्ग-सन्धि)। भीमोऽस्मि =भीमः + अस्मि (विसर्ग-सन्धि) । कोऽस्म्यहम् = कः + अस्मि = अहम् (विसर्ग-सन्धि, यण सन्धि) । दन्तै नः = दन्तैः + हीनः (विसर्ग-सन्धि) । गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि = गुणस्यूतिसमृद्धः + अपि (विसर्ग-सन्धि) । स्वच्छाच्छवदनम् = स्वच्छ + अच्छवदनम् (दीर्घ-सन्धि) । नारदोऽपि नारद: + अपि (विसर्ग-सन्धि)।

प्रकृति-प्रत्यय-विभाग :
वद=√विद् , लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन

रुदन्ति=√रुद् ,लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

गच्छति=√गम् ,लट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

द्रष्टुम्=√दृश्+ तुमुन्

इच्छन्ति=√इष् लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

पश्यन्ति=√दृश् , लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

https://www.evidyarthi.in/